विषय वस्तु

२) मैथिली काव्य- ३१२

१ सरहप्पाद

चर्या गीत

अपने रचि रचि भव निर्माण ।
मिछँलोअ बन्धाबए अपन ।
अन्हेण जाणहुँ अचिन्त जोइ
जाम मरण भव कइसण होइ
जयसोजाम मरणवि तयसो
जिवन्ते मइलँ पाहि विशेसो
जाएथु जाम मरणे विसङ्का
सो करउ रस रसानेरे कङ्खा
जे सचराचर किम्पि न होन्ति
जामे काम कि कामे जाम
सरह भणति अचिन्त सो धाम ॥

(बौद्धगान ओ दोहा)

ज्योतिरीश्वर (नव स्लेवसमे हटाओल गेल अछि)

गीत

तोहरि ओ नहि के सनातक भगव
तोहरि नहि नारी
हमरिए हमरा लग अछ वैसलि
परतष हुलिअ विचारी
परुकाँ सपने हमे अवलोकलि
हमरि तेहि के न जाने
तन्हि असजातिक थाने
कविशेखर जोतिक एहु गावे
राए हरसिंह बुझ भावे ।

(धूर्त समागम)

२ विद्यापति (१,३,५,६,११,१७,२१)

१ गोसाञुनिक गीत

जयजय भैरवि असुर भयाउनि
पशुपति भामिनी माया ।
सहज सुमति वर दिअओ गोसाञुनि
अनुगत गति तुअ पाया ॥
वासर रैनि शवासन शोभित
चरण चन्द्रमणि चूडा
कतओक दैत्य मारि मुखमेलल

कतओक उगिलि कैल कूडा ॥
सामर वरन नयन अनुरञ्जित
जलद योग फूल कोका
कट कट विकट ओठ फुट पा‘‘डरि
लिधुर फेन उठ फोका ॥
घन घन घनन घुघुर कत बाजय
हनहन कर तुअ काता ।
विद्यापति कवि तुअ पद सेवक
पुत्र विरि जनु माता (नगेन्द्रनाथ गुप्त)

३ नटराज

आजु नाथ एक व्रत महासुख पायव हे ।
तोहँ शिव धरु नटवेश कि डमरु बजावह हे ॥
तोहेँ जे कहल गौरा नाचय ,कइसे हमे नाँचव हे ।
चारि शोच मोहि होअ,से कोन परि बाँचव हे ॥
अमिअ चुबिअ महि खसत, बघम्बर खायत हे ।
होयत बघम्बर बाघ, बसहा धरि खायत हे ॥
साप ससरि महि खसत, दहो दिश जायत हे ।
कातिक पोसल मयूर, सेहो धरि खायत हे ॥
सिरसौं ससरति गंग, जगत भरि पाटत हे ।
हएत सहस-मुख धार, समटिओ न जायत हे ॥
मुण्डमाल टूटि खसत, मसाना जागत हे ।
तोहेँ गौरी जायव पडाय, नाच के देखत हे ॥
भनहि विद्यापति गाओल, गावि सुनाओल हे ।
राखल गौरीकेर मान, हर नाच देखाओल हे ॥

५ अन्त-चिन्ता

जतने जतन धन पापे बटोरलहुँ
मिलि मिलि परिजन खाय ।
मरणक बेरि हरि कोइ नहि पूछत
करम सङे चलि जाय ॥
ए हरि वन्दओ तुअ पद नाय ।
तुअ पद परिहरि पाप-पयोनिधि
पार होएब कओन उपाय ॥
जावत जतन हम तुअ न सेवल पद
युवति मति मत्रे मलि ।
अमृत तेजि किए हलाहल पीउल
सम्पदे विपदहि भेलि ॥
भनहि विद्यापति नेह मणे गणि

कहले की बाढब काजे
साँझक बेरि सेब कोन माङइ
हेरइते तुअ पाव लाजे ॥

६ समन भय

माधव हम परिणाम निराशा
तुहुँ जगतारण दीन दयामय अतय तोहर विशवासा ।
तातल सैकत वारि विन्दु सम सुत मित रमणि समाजे
तोहेँ बिसरि मन ताहि समरपल अब मुझु होब कोन काजे ।
आध जनम हम निन्दे गमाओल जरा शिशु कत दिन गेला ।
निधुवन रमणे रस रङ्गे मातल तोहे भजब कोन वेला ।
कत चतुरानन मरि मरि जाओब न तुअ आदि अवसाना ।
तोहेँ जनमि पुनि तोहेँ समाओल सागर लहरि समाना ॥
भनहि विद्यापति शेष शमन-भय तुअ विनु गति नहि आरा ।
आदि अनादिक नाथ कहाओसि अब तारण भार तोहारा ॥ *(नगेन्द्रनाथ गुप्त)*

११ विरहिणी

सरसिज बिनु सर, सर बिनु सरसिज, की सरसिज बिनु सुरे ।
जौवन बिनु तन, तन बिनु जौवन, की जौवन पिय दूरे ॥
सखि हे मोर बड दैव विरोधी
मदन बेदन बड, पिया मोरा बोलछड, अबहुँ देहे परबोधी ।
चौदिसि भमर भम, कुसुमे कुसुम रम, नीरस माजरि पीवइ
मन्द पवन बह, पिक कुहु-कुहु कह, सुनि विरहिनी कैसे जिवइ ।
सिनेह अछल जत, हम भेल न टूटत बड बोल जत सबे धीरे ।
अइसन बोल दह, निअसीम तेजि कहु, उछल पयोनिधि नोरे ।
भनइ विद्यापति अरेरे कमलमुखि गुनगाहक पिय तोरा ।
राजा शिवसिंह रुपनारायण सहजे एको नहि भोरा ॥ *(नगेन्द्रनाथ गुप्त)*

१७ प्रीति

सखि कि पूछसि अनुभव मोय ।
सेहो पिरित अनुराग बखानइते, तिले तिले नूतन होय ।
जनम-अवधि हम रुप निहारल, नयन न तिरपित भेल ।
सेहो मधुर बोल श्रवणहि सूनल, श्रुतिपथे परश न गेल ।
मत मधुयामनि रभसे गमाओल, न बुझल कैसन केलि ।
लाख-लाख युग हिय हिय राखल, तइयो हिया जुडन न गेल ।
कत विदगध जन रस अनुगमन, अनुभव काहु न पेख ।
विद्यापति कह प्राण जुडाइत, लाखवे न मिलल एक ॥ (नरेन्द्रनाथ गुप्त)

२१ गंगाक विनती

कत सुख सार पाओल तुअ तीरे ।
छोडइत निकट नयन वह नीरे ॥
कर जोडि बिनमओ विमल-तरङे ।
पुन दरसन होअ पुनमति गंगे ॥
एक अपराध छेमब मोर जानी ।
परसल माए पाए तुअ पानी ॥
कि करब जप तप जोग धेआने ।
जनम कृतारथ एकहि सनने ॥
भनइ विद्यापति समदओ तोही ।
अन्तकाल जनु बिसरह मोही ॥

३ उमापति (१६२०-१७००)

पाषाण हृदया

अरुण पुरुव दिशि बहलि सगरि निशि गगन मलिन भेल चन्दा ।
मुन्दि गेलि कुमुदिनि तइअओ तोहरि धनि मून्दल मुख अरबिन्दा ॥
आवे मानिनि ॥
कमल वदन कुवलय दुहू लोचन अधर मधुरि निरमाने ।
सगर शरीर कुसुम तुअ सिरज किए तुअ हृदय पखाने ॥
आगे मानिनि ।
असकति कर कंकण नहि पहिरसि हृदय हार भेल भारे ।
गिरिसम तरुअ मान नहि मुञ्चसि अपरुप तुअ बेवहारे ।
आगे मानिनि ॥
अपगुन परिहरि हरषि हेरु धनि मानक अबधि बिहाने ॥
हिमगिरि कुमरि चरण हृदय धरि सुमति उमापति भाने ॥(पारिजात हरण)

धनिक विशेष

कि कहब माधव तनिक बिशेषे । अपनहु तन धनि पाब कलेशे ।
अपनुक आनन आरसि हेरी । चानक भरम का‘‘प कत बेरि ॥
भरमहु नित्र कर उरपर आनी । परसे तरस सरसीरुह जानी ॥
चिकुर निकर नित्र नयन निहारो । जलधर जाल तानि हियहारी ॥
अपन बचन पिक रव अनुमाने । हरि हरि तेहु परि तेजए पराने ॥
माधव आबहु करिअ समधाने । माहेशरि देइ हिन्दु पति जाने ॥ (पारिजात हरण)

४ वंशमणि झा

९ अपूर्व नाच - अप्राप्त, नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक पद्य संग्रहमे प्राप्त होएत

५ जगज्ज्योर्तिमल्ल

गणेशक नचारी

महेशनन्दन तोहे गणेश, दूर करो मोर भव कलेश ॥
तोहर चरण के नहि सेव , सेविए के नहि देवक देव ॥
तोहस(र) सरुप कहि न जाए ,जकर निगम अन्त नहि पाए ॥
जकर नृप जगजोति एहन गाव,आदि अराधिअ तोहर पाव ॥ (गीत पञ्चाशिका)

सूर्यक नचारी

मोहतम देखि मोके उपज तरासे ,
गेयान किरण रवि कर परकाशे ॥
सुमेरु भ्रमणे जार अहर्निशि भागे ,
चरण कमले तार मन मोर लागे ॥
दधजन जप नति करए त्रिकाले ,
करुणा निधान तुमि करो प्रतिपाले ॥
नृत जगजोति कह एडि माया जाले ,
राग गौडगिरि नामे गावे एकताले ॥ (गीत पञ्चाशिका)

६ जगत्प्रकाश मल्ल

वसन्त अप्राप्त नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक पद्य संग्रह

७ गोविन्द दास

नवधा

भजहु रे मन नन्द नन्दन अभय-चरणाविन्द ।
दलभ मानुष-जनम सत्सग तरह ए भव-सिन्धु ॥
शीत आपत बात वरषा ए दिन यामिनि जागि ।
विकल सेवन कपण दुरजन चपल सुख सम लागि ॥
ए धन यौवन पुत्र परिजन एत कि अछि परतीति ।
कमलदल जल जिवन ढलमल भजहु हरिपद नीति ॥
श्रवण कीर्तन स्मरण वन्दन पाद-सेवन दास ।
पुजन ध्यान आत्म-निवेदन गोविन्द दास अभिलाष ॥

कुसुम वदना

कानन कुसुम तोडल किए गोरी । कुसुमहि सब तन निरमति तोरी ॥
आनन हेम-सरोरुह भास । सौरभ श्याम-भ्रमर मिल पास ॥

नयन-युगल-निल उत्पल जोर । सहज सोहाओन श्रवनक ओर ॥
अपरुव तिल-फुल सुललित नास । परिमल जितल अमर तरु बास ॥
बन्धक मिलित अधर जह‘‘ हास । दशनहि कुन्द कुसम परकास ॥
सब तनु घटित चम्पक सम गारा । पानिक तल थल कमल इजोरा ॥
गोविन्ददास एतय अनुमान । पूजह पशुपति निज तनुदान ॥
मनवोध

८ मनवोध

शिशु

कतोएक दिवस जखन बिति गेल । हरि पुनु हथगर गोडगर भेल ॥
से कोन ठाम जतए नहि जाथि । कए बेरि अँगनहुँसँ बहराथि ॥
द्वार उपरसँ धरि धरि आनि । हरखथि हँसथि जसोमति रानि ॥
कए बेरि आगि हाथसँ छीनु । कए बेरि पकला तकला बीनु ॥
कए बेरि साप धरए पुनि जाथि । कए बेरि चून दही बदि खाथि ॥
कौसल चलथि मारिकहुँ चाल । जसोमतिकाँ भेल जिवक जंजाल ॥
कहलन्हि सिखबह हमरहि ताहि । टाँग तोरिअ तँ केओ हम नाहि ॥
मानिअ नहि एत एत बरजीअ । अहीँ हमर सभ केओ भेल छीअ ॥
ई कहि बन्हलन्हि उखरि लगाए । कहलन्हि पुत रिंगि जाउ त पराए ॥
भेलिह निसंक समय हरि पाओल । भरि भरि पाँज उखरि औँघराओल ॥
गुडकल गुडकल भिड कल जाए । जतय अछल दुइ बिछै अकाय ॥
जमला अर्जुन कनला-नाथ । जुगिति उपारल छुइल न हाथ ॥
खसल महातरु हँसल मुरारि । भेल आघात जगत परचार ॥
आँगन सनदेखि नयन नोराएल । जसोमतिकाँ हिय हाथ हराएल ॥
की फल भेल मोहि एतेक अगोरि । ने हरि ऊखरि नहि ओ डोरि ॥
कनइत जसोमति पहुँचलि जाए । नेरु हेरएने जेहने गाए ॥
तरुक सबद सुनि दौडल नन्द । तेजि देल गाए परओ बरु बन्द ॥
की तरु खसल बसात न झाँट । आज हाइत मोर बारह बाट ॥
जसोमति फोए हरि हृदय लगाओल । हरि दामोदर पदवी पाओल ॥
अञ्चल झाँपि भवन तह गेलि । नयन बरसि जलधर तह भेलि ॥
आनन चुम्बि पयोधर धएल । सबहुँ सखि मिलि मङ्गल कएल ॥
भन मनमोध हम अपन गेआन । कहलन्हि बाल गोपाल धेयान ॥ *(कृष्ण जन्म)*

९ चन्दा झा

तीन गाही मुक्तक (पाँच गाहीधरि)

१

न्यायक भवन कचहरी नाम । सभ अन्याय भरल तेहि ठाम ॥
सत्य वचन विरले जन भाष । सभ मन धनक हरन अभिलाष ॥

कपट भरल कत कोटिक कोटि । ककर न कर मर्यादा छोटि ॥
कवि भन चन्द कचहरी घूस । सभ सहमत ककरा के दूस ॥
२
उदर भरण कारुण संतत विविध विषम धन्धा ।
मन मतंगज गुरुक वचन अंकुश श्रवण कन्धा ॥
तदपि त्रास न व्यसन सुस्सह केहन समय मन्दा ।
देवि महेश्वरि करह पालन शरण धयल चन्दा ॥
३
जानकीक जन्मभूमि नाम तिरहूति । अनेक दर्शनज्ञ विज्ञ धर्म्मसौं विभूति ॥
विवेक आत्मतत्व निष्ठ योग योग्य जूति । विधर्म्मकेँ हटाउ आब की रहैछि सूति ॥
४
अस्त्र-शस्त्र रोकि आब मामिलाक मारि । भाइ-भाइकेँ पढैछै नित्य-नित्य गारि ॥
ठक्क लोक हक्क पाव साधुके" उजारि । दैव जे ललाट लेख के सकैछ टारि ॥
५
दूध ओ दही नहि पडैछ आब आम । अस्थि चर्म लोककेँ देखैछि गाम गाम ॥
अन्नमे जनेरकेँ प्रधान ठाम ठाम । धर्म्म त्याग सौं अवश्य कष्ट-अष्टयाम ॥

१० सीताराम झा

परिचय पुँज

मूर्ख

अनुकूलहुँ केँ प्रतिकूल बुझैछ, सुझैछ हिताहित ने जकरा ।
नहि जेष्ठ कनिष्ठ विचार करै, बिनु नौतहि जाइछ जे हकरा ॥
ककरा लग कोन प्रकार रही, ने जनै अछि मूर्ख बूझू तकरा ॥
धरती पर भार स्वरुप सदा, बिनु नाङ्गरि सीङ्गक से बकरा ॥

बकलेल

जाजक छूति न बाजक ढङ्ग, न काजक लूरि न वा किछु खेलक ।
जाए मङ्गैछ न दैत, जतै पुनि लैछ न क्यो यदि सादर देलक ।
फूजल टोक टगैत चलै तन धूसर छूति कतौ नहि तेलक ।
लेर चुबैत चटैत रहै कफ बैसल लक्षण ई बकलेलक ॥

उचक्का

ने डर जानक कानक पातर आनक गेंठ कटै बिच पक्का ।
नित्य पता लगबैत रहै अछि भेल कतौ यदि भीड-भडक्का ॥
जाय ततै ककरो धन दाबि पडाइछ दै ककरो पुनि धक्का ।
हाट बजार फिरैत रहै न रहै थिर कोनहुँ ठाम उचक्का ॥

शङ्खिनी

केश छत्ता जकाँ माथ हत्ता जकाँ
आँखि खत्ता जकाँ दाँत फारे बुझू ।

बोल रोडा जकाँ चालि घोडा जकाँ
पेट मोडा जकाँ वा बखारे बुझू ॥
छति ने लाज सौं, सङ्ग कै पाज सौं
नित्य सत्यकाज सौं तौं उधारे बुझू ॥
राक्षसी ढङ्ग टा सौं करै तङ्ग टा
सङ्गिनी सङ्ग टा तौं संहार बुझू ॥

छुलाहि

चट मुह मे दै देथि कतहु घरमे किछु पाबथि ।
लै सिधहहु सौं अन्न मुट्ठी भरि गाल दबाबथि ॥
खाइत ककरहु देखि ताहि दिस टक्क लगाबथि ।
भँडदुलाहि सौं छोटि कनेक छुलाहि कहाबनि ॥ *(मैथिली काव्योपवन)*

११ बद्रीनाथ झा

सन्ध्या वर्णन

तावत पश्चिम जदधि तट,नभसँ उतरल श्रान्त ।
सन्ध्या-बन्दन करए जनु-कर्मठ नलिनी कान्त ॥
दिनभरि दौडल रौदमे, व्याकुल बाजी जानि ।
मिहिर वारनिधि-तीर जनु, आनल पिअबए पानि ॥
किंवा भए ब्रह्मऋषिसुत, साक्षी कर्मक जानु ।
प्रतिदिन सेबल वारुणी, पतित भेल तँ भानु ॥
जनिक जनक कश्यप स्वयं, लोक वेदमे ख्यात ।
से यदि सेवल वारुणों, तँ की अद्भुत बात ?
स्वच्छो रवि रागी बनल, परसि प्रचिचा-अङ्ग ।
होथि विरक्तो का न जन, विषयी वनिता-सङ्ग ॥
अनुरागी लखि सूर्यकेँ, तेजल किरण-कलाप ।
जनि व्यसनो भूपालकेँ, छाडए शौर्य-प्रताप ॥
गलित-तेल भए गेल रवि, लोक-विलोचन-कर्म ।
अधिकार-च्युत होथि जन, राजपुरुष-जन नम्र ॥
वैरि तिमिर मण्डल मिहिर, बढइत लखि तत्काल ।
प्रोतिकार-असमर्थ जनि, भेल क्रोधसँ लाल ॥
ज अति तपबथि जीवकेँ, क्षणिक पाबि अधिकार ।
तनिक अन्त गति बुझबइत, भानु डुवल जलधार ॥
डुबतहिँ रविक विशालतम्, भेल तमक साम्राज्य ।
धर्मक लोपहि होए जनि, जग पाखण्डक राज्य ॥
कमलिनीक पति विपति लखि, भेल कमल-मुख म्लान ।
तेँ अशरण-मधुकर-निकर, धुनि छल सँ जनि कान ॥
मधु-भण्डार-सरोरुहक दल, कबाड मुनि गेल ।
बाहर भिक्षुक अलि-कुलक, कोलाहल तेँ भेल ॥

खग अकुलाए कुलापमे, कनइत गेल समाए ।
असुर राज्य मे जनि अमर, गिरिह्वरहिँ नुकाए ॥
अवसर उचित उलूक लखि, हर्षित बाहर भेल ।
अभिमानी आक्रमण कए, काकक बदला लेल ॥
घर घर चतुर विलासिनी लेसल मङ्गल दीप ।
आढति कए अरिआति जनु, आनल मदन महीप ॥
विप्र पाठ-तप कएल पुनि, क्षत्रिय नीति-विचार ।
क्रय-विक्रय-लेखा वणिक, वृषल द्विजक परिचार ॥
रहितहुँ नयनक तिमिर बढ़ि, जग आन्हर कए देल ।
अहंङ्कार ममकार ओ, इन्द्रजाल जनु खेल ॥
वरुण-दिशा मुखमे कएल, रजनो निकट बिचारि ।
नवल राग सिन्दूर जनि, सन्ध्या सखा सम्हारि ॥
अन्धकार-योगे बनल, विलो गगन मलान ।
जनि माया-सम्बन्धसँ, ब्रह्म जीव अभिधान ॥
रविक अस्त गेलेँ गगन, उडुक बढल अति भास ।
जनि कंसारि-परोक्षमे, भूतल कलिक विकास ॥
घोर तिमिर आक्रमणसँ, तेजल दिशा विभाग ।
महामोह उद्वेकसँ, देहो यथा विराग ॥
व्योम भूमि वन गिरि नदी, आदि पदार्थ जतेक ।
देल छनहिमे तरुण तम, नील रंग कए एक ॥
तिमिरक अत्याचार जनि, सुनितहिँ लोहित भेल ।
जाँच करक इच्छेँ शशी, उदय-शैल चढ़ि गेल ॥
उगितहिँ चन्द्रक रहल नहि, तिमिरक ओ धन भाव ।
एके रङ्ग सदा रहय, जगमे ककर प्रभाव ॥
कएलन्हि भूतल विमल विधु, सुधाधारसँ धोए ।
शूचि-शासनसँ नीति-रत, जनि नव राजा होए ॥
कुमुद-समेत दशो दिशा, विकसित शिशिक इजोर ।
जन-लोचन-सङ्गहि तथा, प्रमुदित भेल चकोर ॥
कोक-शोक सागर डुवल, कामुक विरहक ताप ।
लोक रोक विनु जनु नरक, पडल कुकर्म प्रताप ॥
कुमुद-कोश कारा-निलय, बान्हल रविक निदेश ।
अति कुलकाँ सानन्द झट, कएलन्हि खोलि निशेश ॥
तुहिन-शीतलो चन्द्र-रुचि देल विरहहिकेँ दाह ।
दैव विमुख भेलेँ जनक, नीका कर अधलाह ॥
प्राची-मुख-चन्दन तिलक, रजनी-रति-रस-कन्द ।
तृषिक-चकोर-दृग-अमृत, गेल गगनमे चन्द ॥ *(एकावली परिणय)*

१२ काशीकान्त झा 'मधुप'

छूतहर

अस्पृश्य भेलहुँ कै कोन पाप ? ,
मृत्तिका एक एके कुम्हार,
ओ दण्ड चक्र चीवर सम्हार ।
आकार एक क्यो मङ्गल घट,
गौबरौड बनल हम सही पाप ॥

जाहि मृगनयनिक कटि माथ उपर,
घुमलहुँ कतेक दिन रसनिर्झर ।
से देखि दूर कहि दूर जाथि,
नहि जानि देल के एहन शाप ?

जे कुकरौ कै सुतबथि पलंग,
पो मद्य विलोचन करथि रंग ।
से देखि हमर मुख करथि घृणा,
दुर्भाग्य पडि गेल केहन पाप ? ॥

चढि चाक प्रदक्षिण हरिक कैल,
आवामे तनकेँ हवन कैल ।
फल तकर केहन विपरीत भेल,
झूठे थिक सबटा योग-जाप ॥

घट घटमे वासी ब्रह्म एक,
हो भान अविद्यासँ अनेक ।
बुझतहुँ वेदान्ती हमर वारि,
अपवित्र कहथि क' क' प्रलाप ॥

हो सदिखन संसारक सुधार,
पतितौक बनथि क्यो कर्णधार ।
उद्धार सुधारकसँ न हमर,
ई सभ्य समाजक थिक प्रताप ॥ *(शतदल)*

१३ सुरेन्द्र झा 'सुमन'

सँओन-भादव

घन घमण्ड गर्जन सँ दिस-दिस
चलल कँपाबय साओन-भादव ।

विकट दन्त तडितक कटकटबय
मेघ पिशाची-नभ-घेरय
बक-पाँतिक लटकाय मुण्डमाला
झंझा-पंजे झिकझारय ॥

अन्धकारमे पटकि विश्वकेँ

झटकि प्रलय समयक कय परिभव ।
घन घमण्ड गर्जनसँ दिस-दिस
चलल कँपाबय साओन-भादव ॥
बृष्टि-मुष्टिएँ सृष्टि कानि की
भय गेल अछि पानि-पानि की ?
दूरहु रहितहुँ ,ज्योति अछैतहुँ
रवि-शशि-नखत नुकैल जानि की ?
जीव-जन्तु तृण-तन्तु गति की ?
स्वयं प्रकृति कम्पित झंझा-रव ।
घन घमण्ड गर्जनसँ दिस-दिस
चलल कँपाबय साओन-भादव ॥

१४ वैद्यनाथ मिश्र यात्री

फेकनी

छैँ रखने पौआही फुच्ची देबहिक देल,
दै छही मिला तइयो अँटगरसँ पानि नित्त
तइओ तोरहिसँ दूध उठौना लैत छिअउ
टिप्पी टा देने जाइत छैँ,
से नहि कहियो बिसरल ताकहिँ ,
बान्हल छउ दू टा बूढि गाए दच्छिना योग ओरियानी मे
बेचलएहँ बाछा गोड पाँचेक कोरयानी मे
बाछो नहि छउ जे रखितैँ वैतरनीक हेतु
गै क्यो नहि औतहु काज कथी लै छैँ बेहाल ?
ने खाइ छही ने पिबइ छही बहिते रहैत छैँ सदरिकाल
की करबैँ तो कैञ्चा बचाय ?
गे बेटा पीबै छउ ताडी ।
टाडामे राखबैँ नुका नुका ?
क' लेतउ पुतहु ओहो बहार ।
ओहू दिन देखने रहिअउ जे तोहर दलान लग
ठाढ रहौ रुपन सोनार
अपने तोँ सहजहि बूढि भेलैँ
भ' गेलौ नातियोसभ समर्थ
कर दान पून्य, कर तीर्थ बर्त
गै फेकनी, तोँ कपिलेश्वर जो ।
दसहरा एलइ
सपनहुँ मे नहि तोँ गेल हेबैँ
एहि जन्म सिमरिया घाट- हे गै ।
जो भ' आ ग '

सङ्गी साथी लै नहि खगतउ-
टुनटुन जाइत छथि सपरिवार
मैना पीसी सेहो जैती आ यार कका सेहो जायता ,
की ग्वार-गोढि की तेलि-सूँरि
सब जाय रहल गङ्गा नहाय ।
दसहरा एलइ
गै फेकनी तहुँ भ' आ ग' की करबै तो कैञ्चा बचाय
बरु नातिनिएँ कें कहि दैहइ-
पौआहीसँ दू फच्चाकें ता देल करत बरु दूध वैह,
सिखतउ परोच्छ मे तोहर गुन
देतैक मिला छौडी अँटगरसँ पानि नित्त
टिप्पी देम' अबिते हेतैक ।
की करबैं तोँ कैञ्चा बचाय
फेकनी गै, जो कर तीर्थ-बर्त
बुचिया, बचवा आ कंचनमा
भ' गेलउ नाति तीनू समर्थ
जिनगीक ठेकाना कोन
आब तोँ सहजहि पाकल आम भेलैं ।
दै छही मिला तइओ अँटगरसँ पानि नित्त ।
छैं रखने पौआही फुच्चा दैबहिक देल । (चित्रा)

१५ यदुवंशलाल 'चन्द'
नेपालक एक झाँकी, नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक पद्य संग्रहमे प्राप्त होएत

१६ पंण्डित सुरेश झा

उन्नत मिथिला

१७ मथुरानन्द चौधरी 'माथुर'
वारीक लत्ती

१८पण्डित श्रीकृष्ण मिश्र
जनकपुरधामक महिमा

१९ राजकमल चौधरी

महावन
जीवनक एहि समयदाहक महावनमे कतेक युगसँ
ताकि रहल छी

कोनो अरुप देवतापर चढाओल गेल किरणमाला
हम सभ हेराएल रस्ता
एकटा हेराएल मुख ककरो,
हम सभ अनिकेत, अपराजित कतेक युगसँ ताहि रहल छी
जीवनक एहि प्राणवाहक महावनसँ
किरणमाला ।
अन्हारमे भेटैत अछि अतीतक वृक्ष-शव अनेक
पयरतर ओंघडाइत छथि स्वर्ग-पतित
अप्सरा ।
आँ खिमे जाडे कँपैत अछि ज्वरग्रस्त चिडै-चुनमुनी ।
उचरैत अछि एकटा कारी-पीयर गिद्ध बारम्बार
हमरे नाम-
चलू हे कवि एहि बेर अहीँ चलू तुतहा मसान
खापडिमे भुजू अहीँ अप्पन प्राण ।
पयरतर ओंघराइत स्वर्ग-भ्रष्ट अप्सरा, आ
हेराएल स्वप्नक लाल उज्जर तारतम्य
हमरा सभकेँ -
आबो विकल-व्यथित क' रहल अछि अकारण ।
आबो मथि रहल छथि क्षीर-सागर,
दव-दानव अविवेकी,
आबो नचिकेता सदिखन पुछैत अछि धर्मराजसँ
जीवन आ मृत्युक रहस्य,
आबो एकटा अश्वत्थामा हाथी निहत रहैत अछि
कोनो युधिष्ठिरक सत्य आ नैतिकताक सुरक्षार्थ
मुदा
ई सभटा पौराणिक दुष्काण्ड हाइत अछि एहि महावनमे ।
हमरे सभक अन्तरंगमे होइत अछि
द्रौपदीक चीर-हरण
आ राजा जनमेजयक विख्यात नागयज्ञ ।
अन्हारमे भेटैत अछि अतीत प्रेतक शव-वृक्ष अनेक
ककरो एकटा अन्हार मुख
नहि भेटैत अछि , जे तकरेसँ पूछल जाय-
ओहि मन्दिरक मार्ग,
पूछल जाय ओहि अरुप देवताक हिरण्यगर्भ सिंहासन ,
जाहि पर उत्सर्ग कयलहुँ किरणमाला
हमसभ
ताकि रहल छी, मनुपूत्रक लेल ।
महावनमे गुँजैत अछि केवल मृत वेश्या सभक क्रन्दन ।
केवल एकटा कारी पीयर गिद्ध

उचरैत हमरे नाम
सुखायल सेमरक कुष्ठोदरमे बैसल, हँसैत अछि
हमसभ अनिकेत-अपराजित बरखासँ
बचबाक लेल,
बचबाक लेल बज्र ठनकासँ ,
सेमरक एहि डारिसँ ओहि डारि तर नुकाइत-
मृत्युसँ नुक्का-चोरी खेलाइत छी- राति भरि ।
किन्तु, कहियो नहि समाप्त होइत अछि राति ।
कहियो पंचम सुरमे नहि गबैत अछि कोकिल
भोरक अथवा वसन्तक गान,
हमरा सभक पूर्वज भोर देखने छलाह ,
गौने छलाह पराती ,वसन्तक स्वागतमे वसन्त
बहार बनि गेल छलाह ,
हुनका सभक कोनो संस्कार ,
कोनो परम्परा ,
कोनो श्रद्धा नहि रहि गेल हमरा सभमे ।
हमसभ निराश्रित निराधार
क' रहल छी अमावास्याक एहि श्मशानमे
सभ व्यतीत वस्तु-जातकेँ
अस्वीकार ।
आब अस्तित्वक अविचल यथार्थ दुइयेटा अछि -
प्रथम ई जे हम ताकि रहल छी
किरणमाला,
दोसर एतेबे जे अतीत-प्रेतक अनिवार्य संगतिमे
महावनमे
जीवित छी हमसभ ॥ (मिथिला मिहिर २७ फरवरी १९६६)

२० सुन्दर झा शास्त्री
प्रभात गीत

२१ डा.धीरेश्वर झा 'धीरेन्द्र'
गुरु द्रौणक प्रति

२२ राजेन्द्रप्रसाद विमल
कहियाधरि

युनिट २ डा.धीरेन्द्र

काल्हि आ आइ(कविता संग्रहसँ ९,१०,१६,३०,४४,५४)

९ जल्दी समापन करी

डाकक पता पर लिखल पत्र पहुँचैए कोनो ठामधरि ।
कोनो नगर, महानगर, कस्वा वा गामधरि ॥
मुदा मोनक पतापर नोरक मसिसँ
उच्छवासक कागजपर लिखाइछ जे पाँती
ओ कतए पहुँचैछ मीत ??
सत्ते ई भावुकता खा' गेल हमरा
सत्ते बताह हम
सामन्ती संस्कारक मुर्दा उघैत भए गेलहुँ बताह ।
कोनाकेँ कहू जे मारि खा-खा धोकरा जकाँ
बटैत संसारके गूड कनियोने कनियोने कएलहुँ ओह-आह ।
'इमेज' जे टूटि जाएत,
खा गेल हमरा सामन्तक भूत,
दुखा रहल हमर आँखिक सूत-सूत ।
सत्ते ई जिनगी बना लेलहुँ तीत ।
रहल ने हमरापर ककरहुँ परतीत ॥
किए खोरत केओ फल्गुक धार ?
किए देखत केओ मोनक सीपीमे नुकायल अश्रु-मुक्ताम टघार ।
आह । जल्दी यात्राक समापन करी
ओइ अपन गामक बाट धरी,
सोझे हम पहुँची 'सत्य राम नाम'धरि ।

१० एखनहुँ धरि

एखनहुँधरि जखनि दिनभरिक थाकल-ठेहियाएल
चोट खा-खा पिडायल
घुरै छी चूर-चूर भए कालेजसँ
तँ तोरहि करै छियह सोर पहिने ।
आह । लुतुक जे लागि गेल छेँ बेटा अन्ना ।
ओना मोनमे जखनि हजारों बेर लिखि,
मुदा कागजपर एक्को बेर ने पठा कोनो पत्र,
हम अपन ब्यर्थ व्यस्तताक झोंझमे छहोछित्त भेल,
लेहुलेहुआन भेल,तोहर माँक उलहन-उपराग अंगेजि
मोने-मोन खूब कानि लैत छी
तँ तखनि.....
की तों ई अनुमान कए सकबह दैया ।

जे तोहर बाप दुनियाँसँ मारि करैत-करैत
भाग्यसँ लडैत-झगडैत
भए गेल छल निपट्ट आन्हर
आ ओकर देहक शोणित मने सुखाकेँ कत'चल गेल छल ।
तोँ तँ मोन छोट कएने
मोने- मोन हमरा पाथर बुझि
स्वयं सुनैत हएबह उलहन-उपराग
अभिधा नइ लक्षणा-व्यंजनामे सोतिपुराम बीच अपना घरमे ।
मुदा रहह ओतए गृहलक्ष्मी बनि ।
सासुक सेवा करिह मोनसँ माइए जेकाँ
ओहो छथून्ह ने अस्वस्थ्य हमर 'नाइटिंगेल' बेटी ।
रह' दएह अपन बापकेँ नोरक मोनिमे आकंठ डूबल ।
शब्दक ई डोका-सितुआ बिछैत
आ कतेको जोंकसँ चुसाइत
कतेको सिंगिक दंशन सहैत
अनेको लोकक उपरागक सटका खाइत ।
मुदा साँचे कहैत छियह
एखनहुँधरि तोरहि सोर करैत छियह
सबसँ पहिने तोरहि हमर जीवनक पहिल फूल ॥

१६ सत्य थिक ई स्नेहमय संसार

थाकि गेलहुँ हम- थाकि गेल देह ई भरपूर ।
थाकि गेल मोन हमर- भेल चूरमचूर ।
खटि रहल छी ककर खातिर ? मरि रहल छी हम ककरा हेतु ?
व्यस्तता ई लागि रहले व्यर्थ ।
जिनगी हमर चलि रहल जइ रुपमे ओकरो कोनो छै अर्थ ?
व्यर्थमे हम दोसरा लोक हित चिन्तना करैत रहलहुँ ।
व्यर्थमे हक अनका हेतु मरैत रहलहुँ ।
व्यर्थमे पोसैत रहलहुँ मोहकेर हम तान ।
सत्यकेर स्पर्श पूरा पावि जागि रहले मोन हम्मर ।
व्यर्थ थिक ई प्रेमकेर व्यापार ।
व्यर्थ थिक पद, प्रतिष्ठा, सम्मानकेर अम्बार ।
व्यर्थ ईर्ष्या, द्वेष वा कि क्रोध
व्यर्थ थिक ई क्रुद्ध होएब ओकरापर जे कि लाएब रोध
अपन-आन, दोस्त-दुश्मन-व्यर्थ ई आधार ।
दू दिनक ई खेल व्यर्थ थिक संसार ।
प्रश्न अबइछ एक- तखनि फेर सत्यकेर आधार की अछि ?
प्रश्न अबइछ एक- ई चलि रहल संसार की अछि ?
अछि बनल तँ बनबइबला तँ हेतै कोनो ।

जे बनौलक थीक केओ ? कतए रहइछ ?
रुप ओकर, चालि ओकर के कहत ?
अथवा करब ई चिन्तना थिक व्यर्थ ।
व्यथता केर बोध लाएब व्यर्थ ।
जिन्दगी ई व्यर्थमय अछि ।
सत्य थिक प्रेमकेर आधार ।
सत्य थिक ई स्नेहमय संसार ।
सत्य थिक श्रम आ निर्माणकेर ई चाह ।
सत्य थिक कंटक हटा बनाएब एक बाट ।
सत्य थिक ई चित्र, सत्य थिक संगीत ।
सत्य कविता- सत्य थिक ई गीत ।
सत्य थिक ई शस्य-श्यामल भूमि-सत्य ई मनुहार ।
सत्य थिक लडि- झगडि लेबे आर करबे प्रेम ।
सत्य थिक ई स्नेहमय संसार ॥

३० अपन परिचय

हम परम नास्तिक सदासँ
तथा तर्कक भक्त ।
देवता छथि बस हमर चार्वाक आकि मार्क्स ।
अपन तर्कक तोरसँ कए ध्वस्त सभटा रुढिकेर ओ ब्यूह ।
जाहिके फाँसि मरण-पथकेर होइछ यात्री
(व्यक्तिकेर अभिमन्यु भावुक बेचारा ॥)
मोज-मस्तीमे बिताएब, दु:खमय जगतीक जीवन,
इएह थिक सिद्धान्त.....
(वेदनामय, अश्रुमय, उच्छ्वासमय मस्ती)
कहै छथि सभ विश्व थिक ई दु:खकेर आगार ।
हम कहैछी तँ उडाबह एकर सभ ओ तत्व
जैकि दु:खदायक भए जाय खाली बेदनाकेर कोष ।
नव आबओ भाव एहिमे ॥

४४ मनस्थिती

एहि अन्हार कोठलीमे बन्न भेल-भेल
अकछा गेल अछि हमर मोन ।
सभ खिडकी खोलि दियौक ।
आवह । रौद । बसात । आँधी- जे अएबाक हो ।
बहओ उनचासो बसात ।
हम एकटा बिहाडि चाहैछी-
जे खसि पडय सभ पुरना छप्पर ।
हम एकटा भूकम्प चाहै छी-

जे ढनमना जाइक लोलके धोखा दैत,
सभ विकास क्षेत्रक नकली घर ।
लाबह एकगोट चिनगी-
बहुत राशे नूर-गोबरौर जमा भ' गेल छै ।
हमरा एकटा डायनामाइट चाही-
एहन जे-
एहि मूल कीलेपर बजारि दियै
सभ भए जाउ खकस्याह । छाउर ॥ बस ॥॥

५४ खोज

कोनो सुनसान एकान्त कक्षमे
जखनि हमरा चारु दिशि नहि हो लोकक भीड
तँ हम बेर-बेर अपना-आपकेँ तकैत छी ।
आ हम हरदम अनुभव कएलहुँ अछि
जे प्रत्येक विशेषणी लबादाक त'रमे मनुक्ख
महज एकटा माइक बच्चा होइछ ।
संगहि हक इहो अनुभव कएल अछि बन्धु
जे ओ बच्चा ओहिना माइक कोरामे चिहुटि
त्रासदायी परिवेशसँ मुक्त भए सुरक्षित होबए चाहैछ ।
मुदा विश्वास करह मित्र ।
प्रत्येक माइक ई नियति थिक जे
ओ परिवेशक इशारा पर नाचय
आ प्रत्येक बच्चा एहि हेतु फज्झतिक संग
फेकि देल जाइछ विश्वक वियावान मे ।
टूटल, भयविह्वल ओ जन्तु
फेर मुट्ठी बान्हि आक्रोशमय मुद्रामे
प्रत्येक लोकसँ संघर्ष करबाक संकल्प लैछ ।
आ परिवेशक सम्पूर्ण वाधक तत्व
ओकरा दुश्मन लगैछ ।
आ ओइ क्रूर माइक बदला
ओ प्रत्येक भविष्यक माएसँ लैछ ।
बदला । बदला ॥ आर बदला ॥॥
मुदा आवेशक घडी जखनि बीति जाइछ
आ दुनियाँ ओकरासँ भयभीत वा मुग्ध भए
ओकरा बहादुरीपर दाद दैछ
आ ओकर रक्तरंजित देहक गर्दनिमे
जयमाल पहिरा दैछ आ जखनि भक्क दए
खुजैछ ओकर प्रज्ञा-चक्षु
तँ ओ मर्माहत भए उठैछ ।

ओकर इच्छा होइछ जे पाबि सकय
ओ एकान्त कक्ष जतय केओ नहि हो आन ।
आ जखनि पबैछ ओ एकान्त
तँ ओ दुबराएल बच्चा चिचिया उठैछ 'माँ' ।
ओह । कतेक यातनादायी अछि ई घडी ।
साफल्य सभ आयाम कतेक खुक्ख लगैछ ।
कतेक टुटन आ कतेक घुटन अछि
आ कतेक गम्भीर खोज ई ॥

युनिट ३

त्रिपूण्ड (पहिल दू सर्ग) डा.धीरेन्द्र आ मिथिला भाषा रामायण (अयोध्या काण्ड) चन्दा झा एवं मिथिला महाकाव्य(पहिल दू अध्याय)

युनिट ४

खण्डकाव्य
व्यथा (पहिल दू सर्ग) आ एकलव्य